मिथिलामे फूट-फूट कऽ लगाओल जैत
ना फुंजा के कुटी काइल जाइत ।
खुड़ा (खसकुरा नेपाली मे) [illegible]
आर्थ [illegible] होला ।
गीरऽ - गीरऽप
विदेशी शब्द :- मिथिलामे तेरहम
शताब्दि सँ मुसलमानक शासन रहल ।
मुसलमान शासक आदि नवाब रहल आ
हुनका हिन्दू के मुसलमान बनाबैत
गेल, फलस्वरूप तुर्की, अरबी आ फारसी
आदिक बहुतो शब्द मैथिली मे समाहित
भेल । सोलहम शताब्दि सँ पुर्तगाली,
डच, फ्रेंच तथा अंग्रेज भारत आबि
अपन प्रभुत्व जमाबय लागल । मुदा
शासन समाप्त भेल तथा अँग्रेज
भारत छोड़ि देलक, मुदा विदेशी
शब्दक प्रयोग धरल्ले करय लागल
जेना- फारसी - खाना, खेसरा,
अंदाज आदि ।
पुर्तगाली - गुदाम, तौलिया,
साबुन आदि ।
अँग्रेजी - रेल, स्टेशन, मोटरगाड़ी
थरमामीटर, बाइसाकिल, डाक्टर,
पुलिस, जज आदि ।

(2)

[illegible]
25.8.20

डॉ॰ सुशील कुमार
सहायक प्राध्यापक
मैथिली विभाग
मिल्लत कॉलेज

बी॰ए॰, बी॰एस॰सी॰, बी॰कॉम पार्ट-II
आधुनिक भारतीय भाषा
पेपर मैथिली - 50 अंक

प्रश्न :- शब्दक भेद एवं परिभाषा सोदाहरण लिखू।

उत्तर :- शब्दक भेद चारि प्रकारक अछि (i) तत्सम (ii) तद्भव (iii) देशी (iv) विदेशी

(i) तत्सम - धर्मभाषा होयबाक कारणे तथा शिक्षित वर्गक प्रभावक कारणे संस्कृत सँ बहुतो शब्द मैथिलीमे आएल। एहने शब्द तत्सम कहबैत अछि। जेना जल, दिन, काल, नेत्र, मृत्यु, शास्त्र आदि।

(ii) तद्भव :- मूल वा बाह्य भाषा सँ आएल शब्द, देश-काल-पात्र अनुसारे नव-नव स्वरूप धारण कएलक। एहि प्रकार शब्द तद्भव भेल। जेना - हस्त सँ हाथ बनल, मुख सँ मुँह बनल, पुत्र सँ पूत बनल।

iii- ~~(iii)~~ संस्कृत, प्राकृत, वा प्राचीन भाषा सँ आएल शब्द जे अपभ्रंश रूपमे होइत विशेषमे प्रचलित भेल। एहन शब्दकेँ देशी कहल गेल। जेना - कोड़ी (मुण्डा भाषाक शब्द" मुण्डा भाषामे बीसक समूह), मुट्ठी।